॥ श्री वीतरागायनमः ॥

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रंथमाला ।

(अंक ७)

जैन भजन मुक्तावली

१

चाल—हैं बेगरज़ [illegible] [illegible] दिया [illegible] आता [illegible] ॥

प्रभू तुमहो तारनतरन हमें भी पार लंघाओ जी ॥ टेक ॥
भवसिन्धू अगम अपार पार इसका नहीं आयो जी ।
मेरी नय्या बीच मंझधार डूबती है लो बचाओ जी ॥ १ ॥
रागादि घटा चहुंओर तिमिर आखों में छायो जी ।
निजपर नहीं सूझे नाथ मुझे रस्ते तो लगाओ जी ॥ २ ॥
आगयो तसकर परमाद ज्ञान विज्ञान भुलाओ जी ।
है निराधार न्यामत अब आवो मतदेर लगाओ जी ॥ ३ ॥

२

चाल—[illegible] मैं यार है मुझे तुमसे गरज नहीं ॥ [illegible]

जिनराज हमेंम यश तेरा गाया नहीं जाता ।
यहाँ पे तो ज़रा लवभी हिलाया नहीं जाता ॥ १ ॥

गणधर भी बहुत कथ चुके आखिर यह कहगए ।
यह भेद है वह भेद बताया नहीं जाता ॥ २ ॥
है क्या मजाल इन्द्र चन्द्र कुछ भी लिख सकें ।
लिखना तो क्या क़लम भी उठाया नहीं जाता ॥ ३ ॥
हैं गुण अनन्त आरपार पा नहीं सकते ।
महिमा अपार सार सुनाया नहीं जाता ॥ ४ ॥
न्यामत को ज्ञान दीजे मगन हो भजन करे ।
भक्ती का भाव हमसे हटाया नहीं जाता ॥ ५ ॥

३

चाल—नाटक ॥ अय सनम तू ज़रा मुझे देता बता कहाँ जाके छिपा नहीं आता नज़र ॥

करो भगवत का ध्यान, वोह है सबसे महान,
उसे है सब का ज्ञान कहा जिन्नो बशर ।
वाकी शक्ती अपार, वाकी महिमा अपार,
गए गणधर भी हार, नहीं पाई खबर ॥ १ ॥
किया करमों का नाश शिव मारग प्रकाश,
करो उसकी तलाश, आवे दिलको सबर ।
छोड़ो झूठे कुदेव, करो अरिहंत सेव,
मिले तुमको स्वमेव, मुक्ती की डगर ॥ २ ॥
जरा करके खयाल, सुमती को सँभाल,
कुमती को निकाल, करो उसका जिकर ।

यह न्यामत आधीन, जिन चरनों में लीन,
हमें सच्चा यकीन, कभी होगी नज़र ॥ ३ ॥

४

चाल—मुसलमां [illegible]

मोक्ष मारग में प्रभु तुमने लगाया हमको ।
तत्व के अर्थ का श्रधान कराया हमको ॥ १ ॥
वीतराग और हितोपदेशी जगत के ज्ञाता ।
यह विशेषन हैं तेरे साफ़ जिताया हमको ॥ २ ॥
ठीक चारित्र दरश ज्ञानका समुदाय सही ।
मोक्ष जाने का है रस्ता सो दिखाया हमको ॥ ३ ॥
मोह मिथ्यात की निद्रा में पड़े सोते थे ।
आपने दिव्य ध्वनी से है जगाया हमको ॥ ४ ॥
जीव फल आपसे भोगे है करमका अपने ।
फलका दाता न कोई और बताया हमको ॥ ५ ॥
भूले फिरते थे विषय भोग में न्यामत हमतो ।
धन्य है आपको जो याद दिलाया हमको ॥ ६ ॥

५

चाल—अब [illegible]

अवार मोरे स्वामी भवदधि से कर मुझको पार ॥ टेक ॥
चहुंगत में रुलता फिरा मोरे स्वामी, तुमरे गहे हैं अधार ।
अवार० ॥ १ ॥

मिथ्या अंधेरा मगर मोहने घेरा, कर्मों के बिकट पहार।
    अबार० ॥ २ ॥
सातों विषय क्रोध मद लोभ माया, आएलुटेरे दहार।
    अबार० ॥ ३ ॥
न्यामत की बेड़ी भँवर में पड़ी है, बेगी से लोना उभार।
    अबार० ॥ ४ ॥

६

चाल—क्यों न लेते ख़बरिया हमारी रे ॥ दादरा ॥

लीजो लीजो खबरिया हमारी जी।
हमारी जी हमारी जी, लीजो लीजो खबरिया हमारी जी ॥ टेक
धोके से आगये हैं कुमतिया की चाल में।
रक्खा है हम को बाँध के कर्मों के जालमें ॥१॥
बीता अनाद काल हाल कह नहीं सकते।
जो दुख हमें दिये हैं वो अब सह नहीं सकते ॥ २ ॥
तन धनका नाथ कुछभी भरोसा मुझे नहीं।
माता पिता भी कोई संगती मेरे नहीं ॥ ३ ॥
सच है कि हैं संसार में कोई न किसी का।
न्यामत को सिवा तेरे भरोसा न किसी का ॥ ४ ॥

७

चाल—है सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जाता मोल ॥

प्रभु हगे मेरा परमाद मुझे परमाद सताता है ॥ टेक ॥

भोरभए पूजा का बेला सो टलजाता है ।
साँझ समय सामायक करना याद न आता है ॥ १ ॥
गुरुभक्ति अरु शास्त्र स्वाध्या वन नहीं आता है ।
तप संयम और दान का देना मन नहीं भाता है ॥ २ ॥
यह षट कर्म श्रावक जिन शासन दरशाता है ।
एक नहीं पूरा होता दिन बीता जाता है ॥ ३ ॥
पाताहै धर्मार्थ काम शिव जो शरणाता है ।
दो शक्ती दीनानाथ सदा न्यामत गुन गाता है ॥ ४ ॥

८

चाल--मुहब्बती होने को मय काया में निशान नहीं ॥ पृष्ठ ८

जय महावीर धरम नीर पिलानेवाले ।
काल त्रिकाल में शिव मार्ग दिखाने वाले ॥ १ ॥
आपने ज्ञान से परघट किया जिन शासन को ।
सब विपक्षों कोहो युक्ती से हटाने वाले ॥ २ ॥
था भरम कौन है इस जगका बनाने वाला ।
है स्वयं सिद्ध बता भ्रम मिटाने वाले ॥ ३ ॥
सात छै तत्त्व दरव सारे अनादी हैं अनन्त ।
वयवउत्पाद ध्रुव भेद बताने वाले ॥ ४ ॥
अर्पित नर्पिताहि सिद्ध होता है वस्तु का स्वरूप ।
नय व परमाण से यह बात जिताने वाले ॥ ५ ॥
स्याद्वादादि से मंडन किया जिनमत न्यामत ।
सारे मत जीतके जिननाम धराने वाले ॥ ६ ॥

९

चाल—ओं जय अंबे गौरी ॥ (आर्ती)

जय जिनवर देवा, जय जिनवर देवा ।
हित उपदेशी सबके, हितउपदेशी सबके, वीतराग देवा ।
जय० ॥ टेक ॥
सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि हो, निज आनन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंतो, अरिरजरहस बहीन ॥ जय० ॥ १ ॥
मोह तिमर मिथ्या तम हरता, ज्यों दिनकर परकाश।
तुमरे नाम ध्यान से, होत करम का नाश ॥ जय० ॥ २ ॥
तुम जग भूषन रहित विदूषन, तुम सबके सरताज ।
भव दधि सागर माँहीं, तारण तरण जहाज ॥ जय० ॥ ३ ॥
तुममन चिंतत तुम गुण सुमरत, निज पर वस्तु विवेक ।
प्रगटे विघटे आपद, छिनमें एक अनेक ॥ जय० ॥ ४ ॥
तुम अविरुद्ध विशुद्ध सुबुद्धी, चेतन सिद्ध सरूप ।
परमातम परमेश्वर पावन, परम अनूप ॥ जय० ॥५॥
जो तुम ध्यावै शिव सुख पावै, मेटै सकल कलेश ।
निजगुण धारण कारण न्यामत नमत जिनेश ॥ जय० ॥६॥

१०

चाल—वारीजाउंरे साँवरिया तुमपर वारनारे ॥

तनमन सारेजी साँवरिया तुमपर वारनाजी, तुमपर
वारनाजी ॥ तन० ॥ टेक॥

बालापनमें कमठ निवारा, अगनी जलता नाग उबारा ।
बैरी करमन मारे तप बल धारनाजी । तन० ॥ १ ॥
जीवा जीव दरब बतलाए, सब जीवन के भरम मिटाये ।
शिव मारग दरसायो दुख परिहारनाजी । तन० ॥ २ ॥
स्यादवाद सतभंग सुनायो, नयपरमाण निश्चय करवायो ।
झूंठमत किये खंडन सत को धारनाजी । तन० ॥ ३ ॥
न्यामत जिन पारस गुणगावे, पुन पुन चरनन सीस नवावे ।
वीतराग सर्वज्ञ तुही हितकारनाजी ॥ तन० ॥ ४ ॥

११

चाल-(ढोला) आनेगा जगाई पिया नींद में छल बलिया ॥
ढोला आनेगा जगाई पिया नींद में, सोरे रे पिया नींद में ॥ टेक ॥

हमारे स्वामी बार क्यों लगाई मेरी बार में ॥ टेक ॥
खड़ी व्याकुल पुकारी द्रोपद, चीर तो बढ़ाया दरबार में ।
हमारे० ॥ १ ॥
पड़ी अगन मंझारी सीता, जलकर डारी पर नारमें ।
हमारे० ॥ २ ॥
करो मेरी भी सहाई स्वामी, नय्या तो पड़ी है मंझधार में ।
हमारे० ॥ ३ ॥
लख ऐसी तेरी महिमा न्यामत, अरज गुजारी सरकार में ।
हमारे० ॥ ४ ॥

१२

चाल— आज आली श्रीमती जननी सुन आयेरी ॥

आज मानों विघन हरन घन छाए जी ॥ टेक ॥

शांत स्वरूप लखो जिनतेरो, शांति सुधा बरसायेजी ।
आज० ॥ १ ॥

मन दादुर भवबनमें प्यासो, तृश्ना कलुष मिटायेजी ॥
आज० ॥ २ ॥

भागे रोग सोग सबमेरे, आनंद उरन समायेजी ॥
आज० ॥ ३ ॥

निरखि श्रीजिन आनन भानन, भ्रमतम घाननसायेजी ।
आज० ॥ ४ ॥

न्यामत समकित सम्पत पाई, जिन चरनन चितलायेजी ।
आज० ॥ ५ ॥

१३

चाल—तुम बोलो या न बोलो आशक तो हो चुका हूं ॥

करो पार नैय्या मेरी, डूबा मैं जारहाहूं ॥ टेक ॥

भवसिन्धु है अपारा, जिसका न वारपारा ।
एजी हैरत में आरहाहूं ॥ १ ॥

मदलोभ क्रोध माया, तूफान सिर पै आया ।
चक्कर में खारहाहूं ॥ २ ॥

मिथ्यात अंधेर छाया, रस्ता मेरा भुलाया,
उलटा मैं जारहा हूं ॥ ३ ॥

परमाद चोर आया, पुरुषार्थ धन चुराया,
आलस में आरहा हूं ॥ ४ ॥

तारण तरण तुही है, भव दुख हरण तुही है,
निश्चय में लारहा हूं ॥ ५ ॥

न्यामत है मझधारा, टुक दीजियो सहारा,
मैं सर झुका रहा हूं ॥ ६ ॥

१४

चाल—तुम बिन लछमन भैय्या हमरा कुछ नाहीं संसार ॥

अब तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन सुने मेरी ॥ टेक ॥
मैं मतिहीन महाहट वादी तुम त्रिभुवन राई ।
भवभव के प्रभु तुम जगनायक अरज सुनो मेरी ॥ १ ॥
इस जगमें सब स्वारथ साथी झूठी मेरा मेरी ।
संकट में प्रभु तुम ही सहाई शरण गही तेरी ॥ २ ॥
न्यामत श्री जिन के गुनगावे चरनन सीस नवाई ।
भरमत हूं आसार जगत में मेटो भव फेरी ॥ ३ ॥

१५

चाल—मैं चंचल बालक हूं [illegible] ॥ (नाटक)

तू ज्ञाता दृष्टा है सब का, सुगमनेता करम भेता ॥ टेक ॥
तू अविनाशी चिन मूरत है, अनन्त चतुष्टय प्रापित है,
सुखकारी है, दुखकारी है, दोहों तू जगजनतारी है ।
तूने शिवमारगदरशाया, धरम बतलाया, जगाया मन में ॥

जनमनरंजन, सब दुख भंजन, जनम निकंजन तुहै निरंजन
क्या क्या क्या ॥
तू ज्ञाता दृष्टा है सबका सुगम नेता करम भेता ॥

१६

चाल—रघुवर कौशल्या के लाल मुनि की यज्ञ रचाने वाले ॥

सन्मति भवसागर के माँह नैय्या पार लँघाने वाले ॥टेक॥
आए पावापुर के बीच, मारे वैरी आठों नीच ।
अपने धनुष ध्यान को खींच, करम के कोट उड़ानेवाले ॥१॥
लेकर चक्र सुदर्शन ज्ञान, करके मिथ्या मत को भान ।
जितलाकर नयमति परमाण । मुक्ति की राह बतानेवाले ॥२॥

१७

चाल—ऐसे तुमसे ऐरे गैरे मैंने लाखों देखे भाले (नाटक)

लेलो श्री जिनवर का शरणा जल्दी मुक्ति जानेवालो ॥टेक॥
सत्य धर्मका टिकट कटालो, निजगुण सामाँ बुक करवालो ।
शिवपुर की बिलटी करवालो ॥ श्री० ॥
दर्शन ज्ञान चरण की गाड़ी, आती है वह आती है ।
जो सीधी शिवनगरी को प्यारे जाती है वह जाती है ॥
आवो आवो जल्दी आवो, आश्रव बंध महसूल चुकावो ।
स्यादवाद को टिकट दिखावो, चौदह दरजों में चढ़जावो ॥
अंजन ध्यान का अटल, कोलकर्मोंका जल ।

फेरो भावना की कल, गाड़ी जायगी निकल ॥
अजी छोड़ो छोड़ो हटको छोड़ो, झूठी युक्ति करने वालो ॥
श्रीजिन० ॥

१८

चाल—अफीम तेरे सट्टे ने पागल बना दिया ॥

इस मोह नींद में तुम्हें सोना न चाहिये ।
सोना न चाहिये तुम्हें सोना न चाहिये, इस मोह० ॥टेक॥
बसमें कुमत के अब तुम्हें होना न चाहिये ।
भोगों में निज आनन्द को खोना न चाहिये ॥ १ ॥
जाना है तुझे दूर विकट पंथ अकेला ।
रस्ते में काटे शूल को बोना न चाहिये ॥ २ ॥
अपना स्वरूप देख पर परणति को छोड़दे ।
तू चेतन जड़ के संग में होना न चाहिये ॥ ३ ॥
तजराग द्वेष न्यायमत सब पुदगलीक हैं ।
सुख में खुशी या रंज में रोना न चाहिये ॥ ४ ॥

१९

चाल—अपनो हमें भक्ती का प्रभु दीजे दान ॥
(अनाथों की तरफ़ से अपील ।)

अपनी हमें सम्पति का कछु दीजो दान ॥ टेक ॥
यह दीन अनाथ विचारे, फिरें घरघर मारे मारे ।
नहीं तुमको कछु ध्यान ॥ अपनी० ॥ १ ॥

दुखियों की दशा निहारो, कछु दिलमें दया विचारो ।
तुम्हारा हो कल्याण ॥ अपनी० ॥ २ ॥
बिन मात पिता रहे बाले, जीने के पड़ गए लाले ।
सुनो तुम हो धनवान ॥ अपनी० ॥ ३ ॥
लाखों ने जान गँवाई, नहीं कोई हुआ सहाई ।
बचालो हमरे प्राण ॥ अपनी० ॥ ४ ॥
दयामय है धर्म तुम्हारा, यों कहता है जगसारा ।
तुम्हें भी है परमाण ॥ अपनी० ॥ ५ ॥
छपने ने वह दशा दिखाई, बने मुसलमान ईसाई ।
कहो करैं क्या भगवान ॥ अपनी० ॥ ६ ॥
नहीं चीर बदन पर म्हारे, फिरते हैं पाँव उघारे ।
बचेगी मुशकिल जान ॥ अपनी० ॥ ७ ॥
है दान बड़ा सुखकारी, है सब संकट परिहारी ।
कहा ऐसा भगवान ॥ अपनी० ॥ ८ ॥
अन्न औषधि ज्ञान विचारो, और अभय दान चितधारो ।
करो चारों का दान ॥ अपनी० ॥ ९ ॥
जिनमत करुणा चितधारी, खोला इक आश्रम भारी ।
हिसार नगर अस्थान ॥ अपनी० ॥ १० ॥
है बाल अवस्था ताकी, सब करो मदद मिल याकी ।
सभी का हो कल्याण ॥ अपनी० ॥ ११ ॥
नहीं लोगे खबर हमारी, घटजागी कान तुम्हारी ।
धरम की होगी हान ॥ अपनी० ॥ १२ ॥

दीनों की सुनो पुकारी, कहैं न्यामत वारम्वारी।
धरम का चमके भान ॥ अपनी ॥ १३ ॥

२०

चाल—बिन फन तन मन सब डस गई नागनि बनके बाँसुरी ॥

तन मन धन बिन फन डस लेगी पर नारी नागनी ॥ टेक ॥
बच चलना चातुर चेतन यह नागन की नागनी।
नैंनों से बश कर—लेती छलबलकारी नागनी ॥ १ ॥
बिन क्रोध किये नहीं काटे तनको कारी नागनी।
यह हँसकर बश मन करती जादूगारी नागनी ॥ २ ॥
कछु देर लगे डसती दीखे वह कारी नागनी।
चपला सी चंचल चोट करत चित हारी नागनी ॥ ३ ॥
इक भवमें प्राण हरे काटे जो कारी नागनी।
भव भव नहीं उतरे लहर डसे पर नारी नागनी ॥ ४ ॥
यह सुख हारी दुखकारी भारी नारी नागनी।
परमें परकामन परकामन परहारी नागनी ॥ ५ ॥
हों लाख जतन जो काटे परबलकारी नागनी।
न्यामत नहीं कोई उपाय डसे परनारी नागनी ॥ ६ ॥

२१

चाल—तुम्हें दूंगा मैं वाकी खबरिया जान ॥ मुझे देदो यह प्यारी सुंदरिया जान ॥ नाटक ॥

तूतो करता है काहे पे इतना मान, तेरा जीना है जलका
बुलबुला जान ॥ टेक ॥

प्यारे चंचल, अरे छोड़ो छोड़ो छलबल।
मची है सारे हलचल, यहाँ होरही है चलचल,
न क़याम का नाम लो। तूतो करता० ॥ १ ॥
सारे काम रहेंगे ना कोई नाम रहेंगे।
चलता नाहिं किसी का, दल बल ज़ोर किसी का ॥
कर न दलील कहीं तूं, न्यामत ढील नहीं तू।
हैदर घर सब पर, तज कर ज़न ज़र ॥
समकर दम कर, करफ़र मतकर,
काहे पे इतना मान, तूतो करता है ॥ २ ॥

२२

चाल—अफीम तेरे सट्टे ने पागल बना दिया ॥ (नई तरज)

मदमोह की शराब ने आपा भुला दिया।
आपा भुला दिया तुझे बेखुद बना दिया ॥ टेक ॥
चेतन तेरा स्वरूप था जड़ सा बना दिया।
जड़ कर्मोंके फन्दे में है तुझको फँसा दिया ॥ १ ॥
निश दिन कुमति को संगमें तेरे लगा दिया।
दामन सुमता सी रानी का करसे छुड़ा दिया ॥ २ ॥
उपयोग ज्ञान गुण तेरा ऐसे दबा दिया।
आ न्यामत जैसे बादल ने सूरज छिपा दिया ॥ ३ ॥

२३

(चाल—बिन्दी लेदे लेदे लेदे मेरे माथे का सिंगार)

मततारे तारे तारे मेरे शील का सिंगार।

शील का सिंगार मेरा धरम सिंगार ॥ टेक ॥
राजा तेरे रानी कहिये आठ दश हज़ार ।
जिस पर तू परतिरया का लोभी जीवन धिक्कार ॥ मत० ॥१॥
तू लाया क्यों नहीं जीत स्वयम्वर खुले दरबार ।
अकेली बनसे लाया मुझको करके मायाचार ॥ मत० ॥२॥
मतना हाथ लगाइयो मेरे पापी दुराचार ।
मैं राखूं शील शिरोमणि नातर मरूं इसवार ॥ ३ ॥
न्यामत शील जगत में कहिये परम हितकार ।
अरे जो कोई याको त्यागे पड़े नरक मंझार ॥ मत० ॥ ४ ॥

२४

चाल—रिवाडी वालों की । कहाँ गया मिजाजन बर वाला ॥

कहाँ गए तेरे संगके साथी, संगके साथी जगके साथी ॥ टेक॥
कहाँ गया तेरा कुटम्ब कबीला, कहाँ संगाती अरु नाती॥१॥
अब तू ऐसे देश चला है, पहुंच सकेगी नहीं पाती ॥ २ ॥
छूट गया तेरामाल खज़ाना, छूट गये घोड़े हाथी ॥ ३ ॥
लाख उपाय करो चाहे बीरन, मौत लिए बिन नहीं जाती॥४॥
चेतन छोड़ चला जड़ देही, जल गया तेल रही बाती ॥ ५ ॥
हाहाकार करें सुतनारी, मात पिता कूटैं छाती ॥ ६ ॥
न्यामत शरण गहो जिन बानी, अन्त समय यही काम आती॥७

२५

चाल—मानतो जगाई घेरी नींद में ॥ ढोला ॥

अरे चातुर चेतन काहे को पड़े हो जग कूप में ।

अरे हाँरे जग कूप में । अरे चातुर चेतन० ॥ टेक ॥

तेरा रूप अरूप अरे चेतन चित्त क्यों लगाया रंग रूपमें ॥
अरे० ॥ १ ॥

तूतो आनन्द सरूप अरे चेतन । किसने फँसाया
विषय कूप में ॥ अरे० ॥ २ ॥

तज पर परणति अब न्यामत, ध्यान तो लगावो निज
रूप में ॥ अरे० ॥ ३ ॥

२६

चाल—नाटक ॥ है सनम तू बता कहाँ जाके छिपा मुझे देतो पता नहीं आता नज़र ॥

(काफ़ी रागजोग)

है सनम तो तेरा, तेरे दिलमें बसा, तू फिरेहै कहाँ नहीं
आता इधर ।
तू खुदीको हटा, अपने आपे में आ, जरा परदा हटा
तुझे आवे नजर ॥ टेक ॥
क्यों शिवाले गया, काहे गिरजा गया, काहे मसजिद में
जाके झुकाया है सर ।
तूने ढूंढा नहीं, वरने था वो यहीं, तेरा माहेजबीं तेरे अन्दर॥१॥
योंही गंगा गया योंही जमुना गया, योंही भटका फिरा
तू तो दर दर ।
अब तू आ अपने घर, प्यारे भटका न फिर,
लख करके नजर दिलमें दिलबर ॥ २ ॥

पढ़े वेदो पुरान, अंजीलो कुरान, हाय तूने पढ़ा नहीं
अपना ज़िकर ।
तू है निपट नादान, मेरे प्यारे अयान, लिया दुनिया को छान,
नहीं देखा स्वघर ॥ ३ ॥
तुही आतम स्वरूप, परमातम स्वरूप, तुही भवशिव स्वरूप,
नहीं तुझको खबर ।
न्यायमत दिल जमा, सारी व्याधी हटा, तू समाधी लगा,
होवे माहिर ॥ ४ ॥

२७

चाल—कबसे तुममें यह शरारत आ गई ॥ ग़ज़ल ॥

कैसे तुमपर यह जहालत छागई ।
कैसे बदमस्ती शरारत आगई ॥ टेक ॥
तुमतो चेतन हो निराकार अय जिया ।
कैसे जड़ पुदगल की सोहबत भागई ॥ १ ॥
रूप अपना किस लिये देखानहीं ।
दूसरों पै क्यों मुहब्बत आगई ॥ २ ॥
सिर झुकाता क्यों नहीं जिनराज को ।
ऐसी क्या तुम में निज़ाकत आगई ॥ ३ ॥
किस तरह से तुझको समझाऊं दिला ।
न्यायमत आफ़त मुसीबत आगई ॥ कैसे० ॥४॥

२८

चाल---रिवाड़ी वाले अलीबख्शकी ॥ कहाँ गया मिजाजन घरवाला ॥

मत कर चेतन छल की बतियाँ, छल की बतियाँ बल
की बतियाँ ॥ टेक ॥
झूठ कपट जग में दुखदाई, जासे नर्क मिले गतियाँ ॥ १ ॥
मन में हो सोई बात उचारो, कर जो कहे मुखसों बतियाँ ॥ २ ॥
न्यामत सरल स्वभाव बनावो, सुखमें बीतें दिन रतियाँ ॥ ३ ॥

२९

चाल—महबूब यार जानो ॥ पंजाबी ॥

सुनसुन प्राणी जिन वाणी, भवभव सुखदानी जी ।
मुक्ती की यही निशानी, क्यों मन नहीं आनी ॥ टेक ॥
जग का अंधेर मिटावें, मन भरम हटावे जी ।
कर्म्मों का फन्द कटावे, शिवनार मिलावे ॥ १ ॥
यह स्यादवाद सत भंगी, अनुयोग चारा अंगी ।
शिव मग दरसावन संगी, षट मत में चंगी ॥ २ ॥
सुज्ञान दीपमाला, कुज्ञान दैत काला ।
असि आऊसा मुखवाला, त्रिभुवन उजियाला ॥ ३ ॥
यह जग जननी जिनवाणी, परमारथ लाभ दानी ।
इम भाषी केवल ज्ञानी, न्यामत होजा श्रद्धानी ॥ ४ ॥

३०

चाल—जै जगदीश हरे॥ (आर्ती)

जय अंतरयामी जय अंतरयामी।
दुखहारी सुखकारी त्रिभुवन के स्वामी॥ जय०॥ टेक॥
नाथ निरंजन, सब दुख भंजन, संतन आधारा।
पाप निकंजन, भवजन सम्पति दातारा॥ जय०॥ १॥
करुणा सिंधु दयालु दया निधि, जयजय गुणधारी।
बंछित पूरण श्री जिन सब जन सुखकारी॥ जय०॥ २॥
ज्ञान प्रकाशी, शिवपुरवासी, अविनाशी अविकार।
अलख अगोचर शिवमय, शिवरमणी भरतार॥ जय०॥ ३॥
बिमल कतारक, कलमल हारक, तुमहो दीन दयाल।
जयजय कारक, तारक पट जीवन रिछपाल॥ जय०॥ ४॥
न्यामत गुणगावे, पाप नशावे, चरणन सिरनावे।
पुन पुन अर्ज सुनावे शिवकमला पावे॥ जय०॥ ५॥

३१

चाल—भक्ती से मुक्ती पावोगे॥

समकित बिन फल नहीं पावोगे।
नहीं पावोगे पछतावोगे॥ टेक॥
चाहे निर्जन बनतप करिये, बिन समता दुख दाहोगे॥ १॥
मिथ्या मारग निश दिन सेवो, कैसे मुक्ती पावोगे॥ २॥

पत्थर नाव समन्दर गहरा, कैसे पार लंघावोगे ॥ ३ ॥
झूठे देव गुरू तजदीजे, नहीं आखिर पछतावोगे ॥ ४ ॥
न्यामत स्याद्वाद मनलावो, यासे मुक्ती पावोगे ॥ ५ ॥

३२

चाल—चल चल गोरी योवना उभारे न चल ॥ (नाटक)

सुन २ प्यारे रस्ते में काँटे न बो, काटे न बो मतवारा न हो। टेक
विषयों की यारी में होवेगी ख्वारी।
सातों में साथी न को, न को, न को प्यारे रस्ते में काँटे न बो॥१
भवबन में डेरा लुटेरों ने घेरा।
उठा मोह निद्रा नसो, नसो, न सो प्यारे० ॥ २ ॥
न्यामत विचारो ज़रा दिल मे धारो।
धर्म रतन को न खो, न खो, प्यारे रस्ते में ० ॥ ३ ॥

३३

चाल—नाटक की—बूटी लाने का कैसा बहाना हुआ बूटी लाने का ॥

विषय सेनेमें कोई भलाई नहीं।
कोई सातों में है सुखदाई नहीं ॥ विषय० ॥ टेक ॥
सुनो रावण का हाल, करके सीता से चाल।
मरा होके बेहाल, पड़ा नर्कों के जाल,
जहाँ कोई किसी का सहाई नहीं ॥ विषय० ॥ १ ॥
पाँचों पांडु कुमार, करके जूवा व्योहार।

दिया द्रोपद को हार, दुःशासन वदकार ॥
हरा द्रोपद का चीर लाज आई नहीं ॥ वि० ॥ २ ॥
वक राजा ने मांस, खाया करके हुलास ।
पड़ी बिपता की फाँस रोया, लेले के स्वाँस ॥
कोई आकर के धीर बँधाई नहीं ॥ विषय० ॥ ३ ॥
देखो यादव सुजान, किया मदिरा का पान ।
हुए ऐसे अयान, खोई जलकर के जान ॥
कोई तदवीर उनकी वन आई नहीं ॥ विषय० ॥४॥
चारुदत्त प्रवीण, हुआ गणिका में लीन ।
ब्रह्मदत्त सुराय, मृग मारे वन जाय ॥
शिवदत्त अजब, किया चोरी का ढब ।
ऐसे सातों सुवीर, सही विषयों की पीर ॥
हुई न्यामत किसी की रिहाई नहीं ॥ विषय० ॥ ५ ॥

३४

चाल—चल चल गोरी योवना उभारे न चल ॥

चलचल प्यारे मुंह को उभारे न चल ॥ टेक ॥
ठोकर लगेगी ज़मी पे गिरोगे ।
जावेगी छलबल निकल, निकल, निकल प्यारे मुंह को उभारे
न चल ॥ १ ॥
फिरते हैं रस्ते में जीव अनन्ते ।
जागी कीड़ी मकोड़ी कुचल, कुचल ॥ कुचल० ॥ २ ॥

ईर्या सुमत यह जिनेन्द्र बखानी ॥
रखियो न्यामत कदम को सँभल, सँभल, सँभल प्यारे सुंह
को० ॥ चल चल० ॥३॥

३५

चाल—नाटक की—दही वाली का तौर दिखाना ॥

दया करने में दिलको लगाना । हाहा सता न कोई जिया
॥ दया० ॥ टेक ॥
चोरी झूठ को मन से हटावो ।
होवे भला जगमें सदा, वरने नर्कों में होगा ठिकाना हाहा०१॥
तज परनारी, है दुःखकारी ।
सारी जिया मन में जचा, माता भगनी सुताके समाना हाहा०॥२
मान लोभ मद माया चारों ।
चित न लगा, करले दया, न्यामत होवे मुक्ती में जाना ॥
हा० ॥ ३ ॥

३६

चाल[नई—अमोलक है यह रतन प्यारे ॥ (पंजाबी चाल)

अमोलक मनुष जनम प्यारे, भूल विषयों में मत हारे ॥ टेक॥
चौरासी लख जून में प्यारे, भ्रमत फिरा चहुं ओर ।
नरक स्वर्ग तिर्यंच में प्यारे, पाए दुख अति घोर ॥
कहीं नहीं सुख पायो प्यारे ॥ अमोलक० ॥ १ ॥

धन दे तन को राखिये प्यारे, तन दे राखिये लाज।
धनदे तनदे लाज दे प्यारे, एक धरम के काज॥
योंही मुनिजन कह गए सारे॥ अमो०॥ २॥
यही धर्म का सार है प्यारे, कर नित पर उपकार।
तज स्वार्थ परमार्थ को प्यारे, भजले वारंवार॥
न्यायमत हो भवदधि पारे॥ अमो०॥ ३॥

३७

चाल नई तर्ज—मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले॥

जरा हो जावो हुशियार ओ मुसाफिर जाने वाले।
मुसाफिर जानेवाले ओ मुसाफिर जानेवाले॥ टेक॥
चोरों की फिरती है डार, क्रोध लोभ माया मदचार।
लूटेंगे सुखसार, तेरे तोड़ ज्ञान के ताले॥ जरा०॥ १॥
कर्मों का फैला है जाल, कुमता चपला चंचल चाल।
करके हाल बेहाल तुझको घोर नरक में डाले॥ जरा॥ २॥
वहाँ न्यामत कोई नहीं यार, मात पिता साजन परिवार।
भाई और सुतनार, यारी का दम भरने वाले॥ जरा०॥३॥

३८

चाल—हाय मुझे दरदे जिगर ने सताया॥

हाय मुझे छलके कुमति ने सताया।
सुख सम्पति लेई, दुख दुरगत देई॥ ॥१॥

विषय भोगों में मुझको फँसाया ॥ हाय० टेक ॥
ज़मीं में आग में पानी में वायु में दरख़्तों में ।
कहूं क्या क्या नचाया नाच लेजा करके कुगतों में ॥
गया नर्कों में जब मरके पड़ा नीचे को सिर करके ।
मुसीबत वहाँ वह देखी थी कलेजा याद कर धड़के ।
लाखों बदख़्वार मिले, हा हा दुखकार मिले ॥
सारे बदकार मिले पूरे मक्कार मिले ।
मुझको देखा जो ज़रा नर्क में आते आते ॥
चीर डाला मेरा तन रस्ते में जाते जाते ।
हाय कुमता के धोके में आया ॥ हाय मुझे ॥

३९

चाल—टूटे न दूध के दाँत उमर मेरी कैसे कटै वाली ॥

टूटा न मोह का जाल करम ते रे कैसे कटैं भारी ॥ टेक ॥
एक तो की हिंसा दुखकारी, दूजे झूठ चोरी मनधारी ।
शील डिगाया लखपरनारी, लीप्रग्रहसारी ॥ टूटा० ॥ १ ॥
मद्य और मांस नित खाया, गणिका संग रहा सुखपाया ।
द्यूत खेल आखेट रचा, भया जीवन पर हारी ॥ टूटा० ॥ २ ॥
काम क्रोध माया में लागा, लोभ मानकर सत को त्यागा ।
न्यामत नाम धर्म सुन भागा, करी कुमतयारी ॥ टूटा० ॥३॥

४०

चाल—अब हिज्रमें रहना हमें मंजूर नहीं है ॥ (ग़ज़ल).

मिथ्यात पै चलना हमें मंजूर नहीं है ।
मंजूर नहीं है हमें मंजूर नहीं है ॥ टेक ॥
पुदगल अनादि जीव अनादी आकाशकाल ।
करता इन्होंका मानना जरूर नहीं है ॥ मि० ॥ १ ॥
परमात्मा सर्वज्ञ बीतराग है सही ।
वह सत्यचिदानंद है मजदूर नहीं है ॥ मि० ॥ २ ॥
कर्मों को काट जब कि मुक्ति जीवकी होवे ।
फिर वहाँ से लौट आने का दस्तूर नहीं है ॥ मि०॥ ३ ॥
आतम सरूप देख तू परमात्मा बने ।
घटमें तेरे दीदार वह कुछ दूर नहीं है ॥ मि० ॥ ४ ॥
सुख दुक्ख तो कर्मोंहीं से होता है जगतमें ।
फल देने में न्यामत कोई मक़दूर नहीं है ॥ मि० ॥ ५ ॥

४१

चाल—पारसनाथ सुनो विनती मोरी यह वरदान दया करपाऊं ॥

परणाति सब जीवन की प्राणी ।
तीन भाँति बरणी हम जानी ॥ टेक ॥
एक पाप इक पुण्य निहारो दोनों ही जगबंध बखानी ।
रागद्वेष हरणी है तीजी, नाश जगत दुख मुक्ति दिखानी॥१॥

जबलग शुद्ध दशा नहिं होवे, तब लग पुण्य गहो सब प्राणी।
पाप पुण्य फिर दोनों तजके, जाय लहो शिव नित सुखदानी॥२
सारे मतका सार यही है, सुनलो सबजन सीख सयानी।
न्यामत निश्चय कर मन अपने है भवदधि पार लंघानी॥३॥

४२

चाल—नाटक॥ क़िस्मत सब पर लानी आफ़त॥

क्यों करता है गर्व अनारी, झूठा है संसार असार।
तनमन धन जोबन इक दिन सब, जाना है लख आँख पसार॥
क्षत्री मारे परशुरामने ढूंढ ढूंढ के वारंवार।
ताको मारा सुभूमचक्री, वह भी सदा रहा नहीं सार॥
रावण ने इन्द्र का, छिनमें गरब हरा।
लछमन ने वोह हता, सो वोह भी ना बचा॥
श्रीकृष्ण ने किया जरासिंधु सरजुदा।
उसे जर्द ने हता न्यामत है सार क्या॥ १॥

४३

चाल—नाटक॥ दिले नादा को हम समझाय जाएंगे।

सदा चेतन तुम्हें समझाये जाएंगे।
मानो ना मानो यह मन्शा तुम्हारी॥
न समझाने से हमतो बाज़ आएंगे॥ टेक॥

संग साथी न कोई तेरा जगत में प्यारे।
तू अकेला है सदा सब हैं तेरे से न्यारे॥
तेरा कोई भी नहीं मात पिता परिवारे।
तुझे अग्नी में धरके यह घरके जलाय आयेंगे॥ सदा० ॥१॥
धन योवन तो रहा स्थिर न किसी का जगमें।
एक दिन छोड़के जाना है तुझे सब जगमें॥
पाप बंबूल क्यों बोता है तू न्यामत मगमें।
यह न कर्मों के फंदे ओ अंधे हटाए जायेंगे॥ सदा० ॥ २॥

४४

चाल—रिवाड़ी वाले मलीवख्श की, दगाबाज तेरे मे ना बोलूं॥

मत मान करो मानो प्यारे।
मानो प्यारे मानो प्यारे, मत मान करो मानो प्यारे॥ टेक॥
मान किया राजा रावण ने।
छिनके बीच गए मारे॥ मत०॥ १॥
इन्दर झूठा इन्द्र कहायो।
हार गया रण मझधारे॥ मत०॥ २॥
चक्री सुभूम सुमंत्र मिटायो।
पड़ दधि नर्क गयो प्यारे॥ मत०॥ ३॥
न्यामत मान महा दुखदाई।
याहि तजे हों सुख सारे॥ मत०॥ ४॥

४५

चाल—अलीवख्श की मेरो प्यारारी जगैना जगा के हारी वादीला जगैना ॥

कोई प्यारो जी चलेना, कोई यारो जी चलेना ।
संगोर नारी बाँदी तो चलेना, कोई प्यारो जी चलेना ॥ टेक ॥
ऊँची अटरिया कोट-कुठरिया जामें प्राण बचेना ।
चारौं गती में तू फिर आया, कर्मों की जंजीर कटेना कोई० १ ॥
भाई भेनरया, मात पितरया, कोई बीच पड़ेना ।
न्यामत सब स्वारथ के साथी, डावर सूकी कोई पैर धरेना
॥ कोई० ॥ २ ॥

४६

चाल—गज़ल होली ॥ ज़माना तेरा मुब्तला हो रहा है ॥

तू क्या उम्र की शाखपै सो रहा है ।
खबर भी है तुझको कि क्या होरहा है ॥ टेक ॥
कतरते हैं चूहे इसे रात दिन दो ।
और इसपै तू यों बेख़बर सो रहा है ॥ तू० ॥ १ ॥
है नीचे खड़ा मौत का मस्त हाथी ।
तेरे गिरने का मुंतज़िर हो रहा है ॥ तू० ॥ २ ॥
अय न्यामत यह टहनी गिरी चाहती है ।
विषय बूंद पै अपनी जां खो रहा है ॥ ३ ॥

४७

चाल—चर्णा ले है कमर के हिलाने को ॥

पढ़ो विद्या अविद्या हटाने को ।
हटाने को भय मिटाने को ॥ टेक ॥
खोया जहालत ने भारत को प्यारे ।
पढ़ो विद्या जहालत मिटाने को ॥ पढ़ो० ॥ १ ॥
फूट अविद्या ने घरघर में डाली ।
सारी भारत की संपत लुटाने को॥ पढ़ो०॥ २ ॥
भारत में व्यभिचार इसने चलाया ।
बल बीरज सभोंके घटाने को ॥ पढ़ो० ॥ ३ ॥
न्यामत अविद्या ने भारत उजाड़ा ।
लड़े आपस में सरके कटाने का ॥ ४ ॥

४८

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी ख़बर नहीं ॥ (गज़ल)

परदा पड़ा है मोह का आता नज़र नहीं ।
चेतन तेरा स्वरूप है तुझको खबर नहीं ॥ टेक ॥
चारों गती में मारा फिरा ख्वार रात दिन ।
आपे में अपने आपको लखता मगर नहीं ॥ १ ॥
तज मन विकार धारले अनुभव सुचेत हो ।
निजपर विचार देख जगत तेरा घर नहीं ॥ २ ॥

तू भवस्वरूप शिवस्वरूप ब्रह्म रूप है।
विषयों के संग से तेरी होती क़दर नहीं ॥ ३ ॥
चाहे तो कर्म काट तू परमात्मा बने।
अफ़सोस कभी इसपै तू करता नज़र नहीं ॥ ४ ॥
निज शक्ति को पहिचान समझ अब तो न्यामत।
आलस में पड़े रहने से होता गुज़र नहीं ॥ ५ ॥

४९

चाल—सोरठ अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोन ॥

जिया रागभाव दुखदाई राग को मन से हटाओ जी।
मन से हटाओ जी, राग को मन से हटाओजी ॥ टेक ॥
है राग निमत संसार करम का मूल बतायोजी।
जो चाहो हो परमानन्द भाव वैराग बनावोजी ॥ १ ॥
यह राग विकट समजान भूल इस रस्ते न जावोजी।
लगजावेगी कर्मों की धूल ज्ञानदामन को बचावोजी ॥ २ ॥
अब पर परणति को छोड़ ध्यान आपे में जमावोजी।
न्यामत तजराग अरु द्वेष सदा आतम गुणगावोजी ॥ ३ ॥

५०

चाल—नाटक ओ ॥ मुसलमाँ होने को भय कावा में तय्यार नहीं।
धर्म के बदले में जां देनेमें कुछ आर नहीं (गज़ल)

कर्म फलदाता कोई और तो बनता है नहीं।
आप फल देता है टाले सो वह टलता है नहीं ॥ टेक ॥

सुख व दुख जीवको होता है क म से अपने ।
कर्म का बंध समझ लो कि बदलता है नहीं ॥ १ ॥
करता हरता है यही जीव करम का अपने ।
यह वह मसला है किसी न्याय से कटता है नहीं ॥ २ ॥
है वह ईश्वर तो सकल विश्व का द्रष्टाज्ञाता ।
उसपै इल्ज़ाम सज़ादेने का लगता है नहीं ॥ ३ ॥
पेड़ बंबूल जो बोवोगे तो काँटे लोगे ।
अम्बफल कैसे लगेगा जो तू बोता है नहीं ॥ ४ ॥
है स्वयम् सिद्ध यह संसार रहेगा योंहीं ।
दिन क़यामत के कभी नाश यह होता है नहीं ॥५॥
इसको ईश्वर जो रचे फेर करे नाश इसका ।
खेल बच्चों का है सो ऐसा वह करता है नहीं ॥ ६ ॥
इसपै ईमान करो झूठ ख़यालात तजो ।
न्यायमत वस्तु का निजगुण तो बदलता है नहीं ॥ ७ ॥

५१

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं । (ग़ज़ल)

दुनिया में देखो सैकड़ों आए चले गये ।
सब अपनी करामात दिखाये चले गये ॥ टेक ॥
अर्जुन रहा न भीम न रावण महाबली ।
इस काल बली से सभी हार चले गये ॥ १ ॥
क्या निर्धनो धनवंत और मूर्खो गुणवंत ।

सब अंत समय हाथ पसारे चले गये ॥ २ ॥
सब जंत्र मंत्र रह गए कोई बचा नहीं ।
इक वह बचे जो कर्मों को मारे चले गये ॥ ३ ॥
सम्यक्त धार न्यायमत नहीं दिल में समझले ।
पछतायगा जो प्राण तुम्हारे चले गये ॥ ४ ॥

५२

चाल—होशेरुबा सितमगरा सच तो बता तु कौन है ।

अय दिल ज़रा तु कर निगाह इस जगमें तेरा कौन है ।
सुख दुखमें साथ दें तेरा सच तो बता वह कौन है ॥ टेक ॥
माता पिता या सुत सुता, इनमें नहीं कोई सगा ।
भाई बहन या बंधुजन, साजन सजन में कौन है ॥ १ ॥
नारी को प्यारी जानता, यारों की यारी मानता ।
अन्त समय में दें दगा, फिर तेरा यार कौन है ॥ २ ॥
तन मन बचन कन धन बसन, हैं सर्व अन्य करले मनन ।
न्यामत धरम कर शुभ यतन, इन बिन हितैषी कौन है ॥३॥

५३

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी ख़बर नहीं ।

यह कैसी मुक्ती आपने मानी बताइये ।
मुक्ती से लौटना बने, क्योंकर सुनाइये ॥ टेक ॥
जो जीवके मुक्ती में लगे कर्म कहोगे ।
तो भेद जगत मुक्ति में क्या है दिखाइये ॥ १ ॥

गर कर्म कोई मोक्ष में बाकी नहीं रहता ।
तो लौटने का ज़र्या भी हमको बताइये ॥ २ ॥
फिर कुछ हज़ार वर्ष की क्यों कैद लगाई ।
इसमें प्रमाण क्या है हमें भी जिताइये ॥ ३ ॥
कहते हो लौटने पै रहे ज्ञान मुक्ति का ।
दुनियां में कोई एक तो हमको दिखाइये ॥ ४ ॥
जब कर्म काट आत्मा परमात्मा बने ।
करमों में फँसे फिर न यक़ीं इस पै लाइये ॥ ५ ॥
परमाण नयसे सिद्ध फिर आना नहीं होता ।
न्यामत ज़रा अज्ञान का परदा हटाइये ॥ ६ ॥

५४

चाल—चर्खा लेदे कमर के हिलाने को ॥

शरणा लेले करम के जलाने को, जलानेको शिवजानेको । टेक
चारोंही मंगल चारों ही उत्तम, चारों का शरणा सुख पानेको ॥ १
अरहंत सिद्ध और मुनी जैनवाणी, कारणहै शिवपद दिलानेको २
सम्यक्त नय्यामें चलबैठ न्यामत, मोह सागरसे पारहो जानेको ३

५५

चाल—नई ॥ अमोलक है यह रतन प्यारे ॥ (पंजाबी)

अमोलक जैन धरम प्यारे, भूल विषयों में मतहारे ॥ टेक ॥
धर्म पिता माता धर्म प्यारे, धर्म सँगाती जान ।
धर्म देत संसार सुख प्यारे, देत स्वर्ग निर्वाण ॥
धर्म बिन कोई नहीं प्यारे ॥ अमोलक० ॥ १ ॥
तनजाते धन दीजिए प्यारे, तनदे लाज सँवार ।
काम पड़े जब धर्म का प्यारे, तीनों दीजो वार ।
धरम से विघ्न टरें सारे ॥ अमोलक० ॥ २ ॥

अग्नि शैल रणसिंधु में प्यारे, पहुंच सके नहिं कोय ।
न्यामत निश्चय जानियो प्यारे, धर्म सहाई होय ॥
धरम भवसागर से तारे ॥ अमोलक० ॥ ३ ॥

५६

चाल—चलती चपला चंचल चाल सुन्दरनार अलबेली ॥ (नाटक)

चल चल अब चल आतम बाग छलबलिया मनबेली ॥
जोबन मदमाता डोले, आनंद अमृत बिष घोले ।
करता कुमतासंग अठखेली ॥ चल चल० ॥ टेक ॥
ज्ञान गुलाब अनुभव भँवर, संयम सोसनजान ।
सहस अठाराशील के सर्व लखो कर ध्यान ॥
आतमगुण फूल चितारो, चर्चा चम्पा चित धारो ।
चहुंदिश खिलरही चरित चमेली ॥ चल चल० ॥ १ ॥
न्यामत बाग निहारिये, दर्शन आँख पसार ।
मरवा मोह निवारदो, आन मिले शिवनार ।
आहा शिवसुन्दर प्यारी, हाँ हाँ आतम सुखकारी ।
सखी सुमतासी लार सुहेली ॥ चल चल० ॥ २ ॥

५७

चाल— टूटे न दूधके दाँत उमर मेरी कैसे कटे वाली ॥

सुन स्याद्वाद सतभंग अरे मत करे जनम ख्वारी ॥ टेक ॥
मतना रागी देव मनावे मत लोभी गुरु शीस नवावे ।
मतना सुन मिथ्या मतवाणी भवभव दुखकारी ॥ १ ॥
कर मिथ्या सेवन नर्क गया तहाँ दुःख सहे भारी ॥
तेरा नेम धर्म और निज सुध बुध सब दलमल करडारी ॥२॥
तैं आठ आठ तेरा को छोड़ पौपच्चीस चितधारी ।
सुमतासी सुन्दर त्याग दई कुमता से करी यारी ॥ ३ ॥

कहीं पूजे भूत अरु ऊत शीतला अरु देवी सारी ।
कहीं पूजे पीर फ़क़ीर क्रोधी अरु ममताधारी ॥ ४ ॥
कहीं पूजी सेढ मसानी, काली नागभवनवारी ।
कहीं पित्रश्राद्ध कराए जिमाए बहु नर अरु नारी ॥ ५ ॥
कहीं भैरव दानाशेर मनाए क्षेत्रपाल भारी ।
कहीं जा पूजागूगा ख्वाजा अरु कुतब गोसभारी ॥ ६ ॥
कहीं गंगा जमुना फिरा डोलता ज्वाला जटधारी ।
कहीं बड़ पीपल पशुचाक मनाए मिल सब नरनारी ॥७॥
कहीं भैंसे बकरे मार चढ़ादिए क्री दुराचारी ।
कहीं बैल बुटेर कलीक बेद में लिखकर दिए जारी ॥ ८ ॥
कहीं पूजे बंदर मस्तक़लंदर धूर्त जटाधारी ।
तज न्यामत यह पाखंड गई क्यों अक्ल तेरी मारी ॥ ९ ॥

५८

चाल—इन्दर सभा ॥ अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

अरे सुन तो चेतन ज़रा देके ध्यान ।
कि होता है कुछ तुझको अपना भी ज्ञान ॥ १ ॥
अविनाशी है चेतन है ज्ञाता है तू ।
बिनाशी पै नाहक़ लुभाता है तू ॥ २ ॥
है अफ़सोस चेतन तेरी सीख पर ।
कि आशिक हुआ तू बिनाशीक पर ॥ ३ ॥
बनाया अरे तूने विषयों को यार ।
लिए फिरता है दुष्ट कर्मों को लार ॥ ४ ॥
उड़ाता है क्यों खाक नरभव की तू ।
करे है तलाश और किस भवकी तू ॥ ५ ॥
मनुष देह फिर तू नहीं पाएगा ।

समझ ले नहीं फिर तू पछताएगा ॥ ६ ॥
यह अच्छी नहीं भूल तू छोड़ दे ।
श्री गुरु पै जा, न्यायमत सीखले ॥ ७ ॥

५९

चाल—सोरठ अधिक स्वरूप रूप का दिया न जाता मोल ॥

कर सकल बिभाव अभाव भावसे करले पर उपकार ॥ टेक ॥
पाप पुन्य से दुख सुख होवें सो सब जग व्योहार ।
तैं तिहुं जगतिहुं काल अकेला, देखन जानन हार ॥ १ ॥
देह संयोग कुटुम्ब कहायो, सोतन अलग निहार ।
हम न किसी के कोई न हमारा, झूठा है संसार ॥ २ ॥
राग भावसे सज्जन माने, दुर्जन द्वेष बिचार ।
यह दोनों तेरे नहिं न्यामत, तू चेतन पदधार ॥ ३ ॥

६०

चाल—नाटक ॥ दहीवाली का तौर दिखाना ॥

सबको जय जय जिनेन्द्र सुनाना ।
आहा समा है कैसा बना ॥ सब० ॥ टेक ॥
श्री जिनवर का ध्यान लगावो ।
जिसने दिया, हमको जगा, मोह निद्रा में था सब ज़माना ॥ १ ॥
सम्यक दरशन दिलमें धारो ।
जिससे जिया, होगा तेरा, सीधा मुक्ती के रस्ते को जाना ॥ २ ॥
स्याद्वाद पर ईमान लावो ।
जिससे कटे, इक दम मिटे, झूठी युक्ती का कल्पित बहाना ॥ ३ ॥
नय परमाण से तहक़ीक़ करलो ।
परदा हटा, पक्ष मिटा, यही न्यामत जिनेन्द्र बखाना ॥ ४ ॥

॥ इति श्री जैन भजन मुक्तावली समाप्तम् ॥